MAA OMWATI DEGREE COLLEGE HASSANPUR

Class :- B.com. 4th sem.

Subject :- Corporate A/c

Submitted By :-

Mr. Subhash Chand

B.Com – II- IVth Semester w.e.f. session 2016-17

Paper: Corporate Accounting-II

4.01

Max Marks: 80

Time: 3 Hours **Internal Marks: 20**

Note: - The Examiner shall set nine questions in all covering the whole syllabus. Question No.1 will be compulsory covering all the units and shall carry 8 small questions of 2 marks each. The rest of the eight questions will be set from all the four units. The examiner will set two questions from each unit out of which the candidate shall attempt four questions selecting one question from each unit. All the questions shall carry 16 marks each.

Important: *The Examiner will set at least THREE numerical and THREE theoretical questions in the question paper.*

Unit- I

Internal Reconstruction; External Reconstruction in the nature of merger and purchase.

Unit- II

Liquidation of a company ; Financial reporting for financial institutions.

Unit- III

Final Accounts of Banking Companies.

Unit- IV

Accounts of Holding Companies.

Suggested Readings:

Shukla M.C, Grewal T.S and Gupta S.C ***Advance Accounts****: S.Chand and Comp., New Delhi.*

Gupta R.L & Radha Swami M. ***Company Accounts****: Sultan Chand and sons, New Delhi.*

Monga J.R. ,Ahuja Girish and Sehgal Ashok ***Financial Accounting****: Mayur Paper Bags, Noida.*

Goel, D.K., Corporate Accounting. Arya Publications, New Delhi

Unit-I

Page No.
Date / /

कम्पनियों का एकीकरण → जब दो या दो से अधिक, समान प्रकृति का व्यवसाय करने वाली कम्पनियाँ आपस में मिलकर एक नई कम्पनी का गठन कर ले तो इसे एकीकरण कहा जाता है

उदाहरण :- यदि दो वर्तमान कम्पनियां A LTD तथा B LTD का व्यवसाय क्रय करने के लिए एक नई कम्पनी C LTD का निर्माण किया जाता है तो यह एकीकरण है।

संविलयन (Absorption) → संविलयन में किसी नई कम्पनी का निर्माण नहीं किया जाता बल्कि पहले से विद्यमान कम्पनी के द्वारा किसी अन्य विद्यमान कम्पनी का क्रय कर लिया जाता है तो इसे संविलयन कहा जाता है।

उदाहरण

यदि A LTD जो पहले से विद्यमान है B LTD के व्यवसाय को क्रय कर ले इसे संविलयन कहा जाता है। इसमें क्रेता कम्पनी बड़ी और विक्रेता कम्पनी छोटी होती है।

उद्देश्य

(1) प्रतिस्पर्धा और द्वेषभाव समाप्त करने के लि
2. बड़े पैमाने पर उत्पादन की बचतें प्राप्त करना
3. पूंजी में वृद्धि करना

4. अल्प वेतन वाले कार्यकुशल व्यक्तियों की सेवाओं का लाभ उठाने के लिए
5. बेहतर नियन्त्रण स्थापित करना
6. संयोजन से होने वाले अन्य लाभ प्राप्त करने के लिए

Accounting के दृष्टिकोण से एकीकरण, संविलयन तथा बाह्य पुनर्निर्माण में कोई विशेष अन्तर नहीं है। तीनों दशाओं में निम्न लेखांकन प्रक्रिया अपनाई जाती है।

(i) समाप्त होने वाली कम्पनी के खाते बन्द करना
(ii) व्यवसाय क्रय करने की entry करना एवं खाते खोलना।

(A) हस्तांतरण करने वाली कम्पनी (Transferor Company)

(B) हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी (Transferee Company)

(C) एकीकरण (Amalgamation) प्रकार

1. मिश्रण की प्रकृति का एकीकरण
2. क्रय की प्रकृति का एकीकरण

1. मिश्रण की प्रकृति का एकीकरण ⟶ एकीकरण तब माना जाएगा जब निम्न 5 शर्तें पूरी हो जाएं:

(i) हस्तांतरण करने वाली कम्पनी की सभी Assets and Liabilities एकीकरण के बाद हस्तांतरण पाने वाली के बन जाते हैं।

(ii) हस्तांतरण करने वाली कम्पनी के समता अंशों के अंकित मूल्य का कम से कम 90% अंश रखने वाले अंशधारी ~~सम्मे~~ सम्मेलन के बाद हस्तांतरण पाने वाली के अंशधारी बन जाते हैं।

(iii) हस्तांतरण करने वाली कम्पनी के वह समता अंशधारी जो कि हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी के समता अंशधारी बनने को सहमत होते हैं उन्हें एकीकरण के फलस्वरूप जो प्रतिफल प्राप्त होता है वह हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी द्वारा पूर्ण रूप से अपनी कम्पनी के समता अंश देकर चुकता किया गया हो सिवाय इसके कि अपूर्ण अंशों के बदले नकद दिया जा सकता है।

(iv) जब व्यापार को चालू रखने की इच्छा हो।

(i) सम्पत्तियां क्रय की → हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी ने विक्रेता कम्पनी की रोकड़ सहित सभी सम्पत्तियां क्रय की है और दायित्व नही लिए है।

(ii) व्यवसाय क्रय किया → इसमें हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी ने रोकड़ सहित सभी सम्पत्तियां एवं दायित्व क्रय किए है।

क्रय मूल्य

Purchase Consideration → हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी द्वारा हस्तांतरण करने वाली कम्पनी को उसका व्यवसाय क्रय करने के प्रतिफल स्वरूप चुकाया गया मूल्य क्रय मूल्य कहलाता है।
AS-14 के अनुसार एकीकरण के फलस्वरूप दिए गए प्रतिफल से आशय उन अंशो, अन्य प्रतिभूतियो एवं नकद धनराशि से है जो हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी द्वारा हस्तांतरण करने वाली कम्पनी के अंशधारियो के लिए दिए जाते है।
इस प्रतिफल मे हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी द्वारा लिए जाने वाले दायित्वो की राशि और हस्तांतरण करने वाली कम्पनी के लेनदारो को प्रत्यक्ष रूप से भुगतान की गई राशि को शामिल नही किया जाता है

विधियां

(1) **एक-मुश्त भुगतान विधि** → यदि हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी व्यवसाय क्रय के ~~[illegible]~~ बदले सम्पूर्ण राशि एक साथ चुका देती है इसे एक मुश्त भुगतान विधि कहा जाएगा

Example यदि A LTD, B LTD के व्यवसाय को 10,00,000 मे क्रय करने को सहमत होती है।

(2) **शुद्ध भुगतान विधि** → क्रय मूल्य मे हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी के अंशधारियो के लिए दिए गए समस्त भुगतान शामिल किए जाते है जो अंशो, ऋणपत्रों या नकदी आदि किसी भी रूप मे हो सकते है।
इस विधि मे निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:-

(i) हस्तांतरण करने वाली कम्पनी के समता तथा पूर्वाधिकार अंशधारियो के लिए दिए गए सभी भुगतान क्रय मूल्य मे शामिल किया जाते है और ये भुगतान अंशो एवं नकदी के रूप मे हो सकते है।

(ii) ऋणपत्रधारियो एवं अन्य बाह्य दायित्वों के लिए किए गए भुगतान को क्रय मूल्य मे शामिल नही किया जाता है क्योंकि यह मान लिया जाता है कि दायित्व हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी द्वारा ले लिए गए है और फिर उनके द्वारा इनका भुगतान कर दिया गया है

(vii) हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी द्वारा समापन से सम्बन्धित व्ययों के भुगतान के लिए हस्तांतरण करने वाली कम्पनी को दी गई राशि को भी क्रय मूल्य में शामिल किया जाता है।

(2) **शुद्ध सम्पत्ति विधि** ⟹

Purchase Consideration = Assets taken over (revalued value / Book value

(−) Liabilities taken over (revalued value / Book value)

<u>इसके लिए निम्न बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए;</u>

(i) यदि किसी विशेष सम्पत्ति को हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी नहीं लेती है तो उस सम्पत्ति के क्रय मूल्य में नहीं जोड़ा जाएगा।

(ii) केवल उन्हीं दायित्वों को शामिल किया जाएगा जिन्हें हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी लेने के लिए सहमत हो।

(iii) ख्याति और पूर्वदत्त व्ययों को भी सम्पत्तियों में शामिल किया जाता है।

(iv) कृत्रिम सम्पत्तियों (Preliminary Exp, Underwriter Commission, P&L A/C Dr Balance) को क्रय मूल्य में शामिल नहीं किया जाता।

(v) Cash को सम्पत्तियों में शामिल किया जाता है यदि जाने वाले ने Cash नहीं लिया है तो इसे सम्पत्तियों में शामिल नहीं किया जाएगा।

(vi) Accumulated Profit, General Reserve, Reserve Fund, Sinking Fund, Dividend Equalisation Fund, Capital Reserve आदि को शामिल नहीं किया जाता है।

(vii) इसमें यह ध्यान देना चाहिए कि हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी ने Assets Purchased की है या Business Purchased

(viii) इस विधि का प्रयोग तभी करना चाहिए जब Net Payment method से सम्भव ना हो।

(3) **आन्तरिक मूल्य विधि** Intrinsic Worth method ⟶

इस विधि के अंतर्गत क्रय मूल्य की गणना हस्तांतरण करने वाली कम्पनी के आन्तरिक मूल्य के आधार पर की जाती है।

Ex X LTD, Y LTD को क्रय कर रही है तथा दोनों कम्पनियों के अंशों का आंतरिक मूल्य

इसके और पूर्व है पेसी स्थिति में Y Ltd को दिए जाने वाले अंशों की संख्या

Total no. of Share of Y LTD × $\frac{10}{20}$

Intrinsic value = $\frac{\text{Net Assets}}{\text{No. of Share of Issued Called}}$

Net Assets = Total Assets – outside liabilities

~~इसके बाद अंशों के आंतरिक मूल्यों को अंशों की संख्या~~

Purchase Consideration = Intrinsic value of Shares × No. of Shares

लेखांकन विधि Accounting treatment

हस्तांतरण करने वाली कम्पनी की पुस्तकों में लेखा (Transferor)

1. हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी द्वारा ली गई सभी Assets को Realisation में Book value पर Transfer

Realisation A/c dr
To Sundry Assets (Individually)

इस entry को बनाते समय निम्न बातें ध्यान रखनी चाहिए

(i) यदि Transferee Company Cash, Cash at Bank को नहीं लेती है तो इन्हें Realisation A/c में Transfer नहीं किया जाएगा लेकिन यदि Transferee Company इन्हें लेती है तो इन्हें Realisation A/c में Transfer किया जाएगा

(ii) Goodwill, Intangible Assets ÷ Trade marks, Patent Right को Realisation A/c में Transfer किया जाता।

(iii) यदि किसी सम्पत्ति पर कोई आयोजन बनाया गया है तो सम्पत्ति को Gross value पर ही Realisation A/c में Transfer किया जाएगा

2. दायित्वों के हस्तांतरण के लिए

Sundry liabilities A/c dr (Individually)
To Realisation

Note:- ऐसे दायित्व, जो हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी द्वारा नहीं लिए जो Realisation A/c में Transfer नहीं किया जाता है

(ii) संचित लाभ जैसे: P&L A/c Cr Balance, Gen. Reserve Capital Reserve आदि को Realisation A/c में Transfer नहीं किया जाता है।

(3) हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी द्वारा दिए जाने वाले क्रय मूल्य के लिए :

Transferee Company A/c dr
To Realisation
(for Purchase consideration agreed upon)

(4) क्रय मूल्य प्राप्त होने पर

Bank A/c dr
Shares in Transferee Co. A/c dr
To Transferee Company
(for Purchase consideration received)

(5) जो सम्पत्ति पाने वाली कम्पनी ने नहीं ली उसी बेचकर प्राप्त राशि

Bank A/c dr
Realisation A/c dr
To Assets
(for Cash received on sale Assets)

(6) जब दायित्वों को हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी ने न लिया हो

Liabilities A/c (Individually) dr
Realisation A/c dr
To Bank
(for liabilities paid)

7. (a) समापन व्ययों के भुगतान के लिए (यदि हस्तांतरण करने वाली कम्पनी ने वहन किया है)

Realisation A/c dr
To Bank
(Payment of expenses of Liquidation)

(b) यदि समापन व्ययों का भुगतान हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी ने स्वीकार कर लिया है तो निम्न दो विधियों में किसी एक विधि से Entry की जाएगी

(i) यदि समापन व्यय हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी द्वारा लिया गया है तो उसके लिए कोई Entry नहीं की जाएगी

(ii) पहले तो हस्तांतरण करने वाली व्ययों का भुगतान अपने पास से कर दे और फिर उन्हें हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी से प्राप्त कर ले।

Page No.
Date / /

I. Transferee Co. A/c Dr
To Bank A/c
(Expenses of Liquidation to be met by transferee Co.)

II Bank A/c Dr
To Transferee A/c
(Liquidation Expenses received from Transferee Co.)

8. ऐसे दायित्व का भुगतान करना जो Balance Sheet में नहीं दिखाया गया है:

Realisation A/c Dr
To Bank
(Payment of Contingent Liabilities)

9. Realisation A/c से लाभ होने पर

Realisation A/c Dr
To Equity Shareholder's

10. Loss होने पर

Equity Shareholder's A/c Dr
To Realisation A/c

Page No.
Date / /

11 Equity Share Capital A/c Dr
Reserve Fund A/c Dr
Contingency Fund A/c Dr
Dividend Equalisation Fund A/c Dr
W.C Fund A/c Dr
Insurance Fund A/c Dr
P&L (Cr Balance) Dr
To Equity Shareholder A/c

12. Equity Shareholder's A/c Dr
To P&L (Dr Balance) A/c
To Share Issue Exp A/c
To Discount on Share & debenture A/c

13. समता अंशधारियों को भुगतान करने पर

Equity Shareholder A/c Dr
To Bank A/c
To Share in Transferee Co. A/c

Page No.
Date / /

हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी की पुस्तकों मे प्रविष्टियां

(A) हित एकीकरण विधि → एकीकरण होने वाली कम्पनियों की Assets और Liabilities मे न्यूनतम परिवर्तन किए जाते हैं।

1. हस्तांतरण करने वाली कम्पनी की सम्पत्तियों, दायित्वों और संचयों का हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी की पुस्तकों मे उन्ही वर्तमान Book value पर और उसी रूप मे लेखा किया जाता है जिसमे वह एकीकरण की तिथि पर अंकित है।

(ii) हस्तांतरण करने वाली कम्पनी के सभी संचय उसी रूप मे पश्चात् बनाए रखी जाती है और उन्हे हस्तांतरण पाने वाली कम्पनी के सभी Balance Sheet मे उसी रूप मे दिखाया जाता है जिस रूप मे करने वाली कम्पनी की Balance Sheet मे थी

General Reserve — Gen. Res
Capital Res. — Capital Res

(III) हस्तांतरण करने वाली कम्पनी के P&L A/c के शेष को पाने वाली कम्पनी की पुस्तकों मे Transfer कर दिया जाता है

Page No.
Date / /

1. क्रय प्रतिफल का लेखा

Business Purchase A/c Dr
To Liquidator of Transferor Co.
(Purchase Consideration becoming due)

2. ली गई सम्पत्तियों एवं दायित्वों का लेखा करना

Sundry Assets A/c Dr
To S. Liabilities A/c
To Prov. for Doubtful Debts A/c
To P & L A/c
To Reserve A/c (adjusted value)
To Business Purchase

3. क्रय मूल्य के भुगतान पर

Liquidator of the Transferor Co. A/c Dr
To Share Capital A/c
To Securities Premium A/c
To Bank A/c

(यदि अंशो का आवंटन Discount पर किया जाता है तो उपरोक्त Entry मे Share Discount A/c को Dr किया जाएगा)

4. पाने वाली कम्पनी द्वारा करने वाली कम्पनी के समापन व्ययों का भुगतान किया जाता है तो इन व्ययों को Gen Res / P&L A/c से चार्ज किया जाएगा)

General Reserve A/c Dr
To Bank A/c

formation exp के लिए

Preliminary Expenses A/c Dr
To Bank

(B) क्रय विधि (Purchase Method) → यह विधि उस समय अपनाई जाती है जब समामेलन क्रय की प्रकृति का हो।

1. क्रय प्रतिफल का लेखा

Business Purchase A/c Dr
To Liquidator of the Transferor Co.
(Purchase Consideration becoming due)

2. ली गई सम्पत्तियों और दायित्वों का लेखा

(i) Credit side > Debit side = Goodwill Dr

Sundry Assets
Goodwill (B/F)
To Sundry liabilities
To Business Purchase

(ii) Credit side < Debit side = Capital Reserve (Cr)

Sundry Assets A/c Dr
To S. liabilities
To Business Purchase
To Capital Reserve (B/F)

3. क्रय मूल्य के भुगतान पर

Liquidator of Transferor Co. Dr
To Share Capital A/c
To Securities Premium A/c
To Bank

यदि Share allotment discount पर किया गया है तो Share discount A/c को Debit किया जाएगा

4. Statutory Reserve का लेखा करने के लिए

Amalgamation Adjustment A/c Dr
To Statutory Reserve A/c

5. हस्तांतरण करने वाली कम्पनी के समापन व्यय का भुगतान

Goodwill A/c or Capital Reserve A/c Dr
To Bank

6. Formation Expenses के लिए

Preliminary Exp A/c dr
To Bank

7 यदि Question मे Goodwill A/c और Capital Reserve होते है तो Goodwill को Capital Reserve से written off किया जायेगा।

Capital Reserve A/c dr
To Goodwill

8. Preliminary exp written off

General Res A/c dr
or
P&L dr
To Preliminary Exp A/c

आन्तरिक पुन: निर्माण
(Internal Reconstruction)

अर्थ आन्तरिक पुनर्निर्माण के अंतर्गत एक विद्यमान कम्पनी स्वयं को आन्तरिक रूप से पुन: संगठित करती है। अतः इसके अन्तर्गत न तो किसी विद्यमान कम्पनी का समापन किया जाता है और न ही किसी कम्पनी के व्यवसाय को क्रय करने के लिए नई कम्पनी स्थापित की जाती है एक कम्पनी अपना आन्तरिक पुनर्निर्माण दो प्रकार से कर सकती है:-

1. अंश पूंजी मे परिवर्तन
Alteration of Share Capital

2. अंश पूंजी मे कमी
Reduction in the Share Capital

1. अंश पूंजी मे परिवर्तन →
एक कम्पनी अपनी अंश पूंजी मे परिवर्तन केवल तभी कर सकती है जब इसके लिए न्यायालय की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक न हो।

(A) अंश पूंजी मे वृद्धि →
नये अंशो का निर्गमन करके अंश पूंजी मे वृद्धि कर सकती है।

(B) अंशो का एकीकरण →
इससे कम्पनी अपने कम

अंकित मूल्य वाले अंशो का एकीकरण अधिक अंकित मूल्य वाले अंशो मे कर सकती है।

20,00,000 रु अंश पूंजी को जो 10 रु वाले 2,00,000 अंशो मे विभाजित है 100 रु वाले 20000 अंशो मे एकत्रीकरण कर दिया जाए

Share Capital A/c (10 रु) New dr 20,00,000
    To Share Capital A/c (100 रु) old 20,00,000

(C) अंशो का उप-विभाजन → जिन अंशो का अंकित मूल्य अधिक होता है उन्हे कम्पनी कम अंकित मूल्य वाले अंशो मे उप-विभाजित करके अंश पूंजी मे परिवर्तन कर सकती है।

EX:- 5000 अंश जो 100 रु वाले जो 80 रु चुकता है, का उप-विभाजन 10 रु वाले 5000 अंशो मे किया जाना है तो इन अंशो को 80% (8 रु) चुकता मानते हुए उप-विभाजन किया जाएगा।

Share Capital A/c (100 रु) old 4,00,000
    To Share Capital (10 रु) New 4,00000

(D) अनिर्गमित अंशो को रद्द करना → कम्पनी जिन अंशो को निर्गमित नहीं करती उन्हे Cancel कर दिया जाता है। इसके लिए Accounting Entry नही की जरूरी इसके लिए न्यायालय की स्वीकृति लेना भी आवश्यक नही है।

(E) अंशो का स्टॉक मे परिवर्तन →

Equity Share Capital A/c dr
    To Equity Stock A/C

2. ~~अंकित~~ अंश पूंजी में कमी करना → कम्पनी द्वारा आवेदन करने पर और ट्रिब्यूनल द्वारा स्वीकृति प्रदान करने पर कोई भी कम्पनी, कम्पनी अधिनियम 2013 की धारा 66 मे दिए गए प्रावधानों के अनुसार अपनी अंश पूंजी मे कमी कर सकती है।

अंश पूंजी मे कटौती की शर्त एवं विधि

I. अंश पूंजी मे कटौती तभी की जा सकती है जब कम्पनी अन्तर्नियम इसकी अनुमति दे। यदि कटौती का प्रावधान नही हो तो पूंजी मे परिवर्तन के लिए विशेष प्रस्ताव पास करना आवश्यक होगा,

II. कटौती के लिए एक विशेष प्रस्ताव पास करने के 30 दिन के अन्दर इसकी एक प्रति रजिस्ट्रार के पास फाइल करनी होगी

(III) इसके बाद कटौती की पुष्टि के लिए ट्रिब्यूनल मे आवेदन करना होगा।

(iv) यदि ट्रिब्यूनल उचित समझे तो कम्पनी को आदेश दे सकता है कि ट्रिब्यूनल द्वारा निर्धारित अवधि तक कम्पनी अपने नाम के अन्त में "And Reduced" शब्द भी लिखें।

(v) ट्रिब्यूनल के आदेश के 3 माह के अन्दर ट्रिब्यूनल की पुष्टि के आदेश एवं परिवर्तित सीमानियम की एक प्रमाणित प्रति कम्पनी रजिस्ट्रार के पास रजिस्ट्रेशन के लिए भेजनी होगी। और 1 माह के अन्दर रजिस्ट्रेशन का प्रमाण-पत्र जारी करेगा (रजिस्ट्रेशन की तिथि से ही अंश पूंजी में कटौती प्रभावी मानी जायगी)

पूंजी में कमी निम्न 3 विधियों में से किसी के द्वारा भी की जा सकती है →

(i) दायित्व को कम करना → Ex:- X Ltd की अंश पूंजी को जो कि 10₹ वाले 50000 समता अंशों में विभाजित है जिन पर 8₹/Share चुकता है घटाकर 8₹ पूर्णतया चुकता मूल्य वाले 50000 अंश कर दिया गया।

Equity Share Capital A/c (₹10) 4,00,000
TO Equity Share Capital A/c (8₹) 4,00,000

2 रु. का अंशधारियों को लाभ होगा, यह राशि अब उन्हें भविष्य में नहीं चुकानी पड़ेगी। दूसरी तरफ 2 रु. प्रतिभूति के लिए कम हो जाएंगे। इसके लिए लेनदारों की सहमति लेना आवश्यक होगा।

(ii) कम्पनी की आवश्यकता से अधिक चुकता पूंजी के भाग को वापिस करना

(a) Share Capital A/c dr
TO Sundry Shareholders A/c

(b) Sundry Shareholders A/c dr
TO Bank

इसके लिए भी लेनदारों की सहमति जरूरी होती है।

(iii) चुकता पूंजी के उस भाग को रद्द करना जो हानियों के कारण नष्ट हो चुका है।

जो कम्पनी लगातार हानि उठा रही हो, उसके स्थिति विवरण के सम्पत्ति पक्ष में written off न की गई कृत्रिम सम्पत्तियां विद्यमान होती हैं, Pre Exp, Underwriting Comission, Discount on issue of Shares and debenture. इसके अतिरिक्त, कम्पनी की अन्य सम्पत्तियां भी वास्तविक मूल्य से अधिक पर प्रदर्शित की गई होती हैं। अतः पूंजी को उसके वास्तविक मूल्य पर प्रदर्शित करने के लिए चुकता पूंजी के उस भाग को कम करना जो हानियों के कारण समाप्त हो चुका है।

(i) चुकता अंश पूंजी की राशि में कमी के लिए:-

Share Capital A/c dr
TO Reconstruction A/c

DELTA Page No.
Date / /

(ii) दायित्व मे कमी करने पर

Debenture A/c dr
S. Creditors A/c dr
To Capital Reduction A/c
or
To Reconstruction A/c

(iii) Reconstruction A/c dr
To P&L A/c
To Goodwill A/c
To Trade mark A/c
To Patents A/c
To P&Machinery A/c
To Unrecorded liab (if any)

4. Reconstruction A/c dr
To Capital Reserve A/c

जिस प्रकार एक कम्पनी की स्थापना कम्पनी अधिनियम द्वारा की जाती है उसी प्रकार कम्पनी का समापन भी कम्पनी अधिनियम द्वारा किया जाता है। कम्पनी के समापन के साथ ही कम्पनी का व्यापार भी बन्द हो जाता है। अतः इस स्थिति मे कम्पनी की सभी सम्पत्तियों का विक्रय करके प्राप्त राशि से कम्पनी के लेनदारों का भुगतान किया जाता है। यदि दायित्वों के भुगतान के बाद भी कोई आधिक्य शेष रहता है तो उसे अंशधारियों में बांट दिया जाता है। कम्पनी के समापन कार्य के लिए नियुक्त किए जाने वाले व्यक्ति को निस्तारक कहा जाता है।
(Liquidator)

यदि सम्पत्तियो को बेचने से इतनी राशि प्राप्त नही हो पाती है जिससे कि लेनदारो का भुगतान किया जा सके और यदि अंशधारियो के पास Partly Paid Shares हो तो उनसे Calls की जाती है प्राप्त राशि का प्रयोग लेनदारो के भुगतान मे किया जाता है

समापन की विधियां

(A) ट्रिब्यूनल के द्वारा समापन → इसे न्यायालय द्वारा समापन भी कहा जाता है निम्न दशाओ मे समापन का आदेश दिया जा सकता है।

1. ऋणो का भुगतान करने मे असमर्थ हो
2. विशेष प्रस्ताव पास करके

3. यदि कम्पनी की गतिविधियां कपटपूर्ण विधि से चलाई गई हो।

4. पिछले 5 वर्षों के वित्तीय विवरणों रजिस्ट्रार के पास न भेजा गया हो।

5. समापन करना उचित एवं न्यायोचित हो।

(B) स्वैच्छिक समापन (Voluntary Winding up)

जब कम्पनी के सदस्य एवं लेनदार स्वेच्छा से न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना समापन करना तय करते है इसे स्वैच्छिक समापन कहते है।

प्रकार

स्वैच्छिक समापन
- सदस्यों द्वारा
- लेनदारों द्वारा

(i) सदस्यों द्वारा समापन →

इसमे कम्पनी के संचालकों को कम्पनी की शोधन क्षमता के बारे मे वैधानिक घोषणा कम्पनी रजिस्ट्रार को भेजनी जरूरी हो। इसके संचालकों को यह आश्वासन देना होता है कि कम्पनी अपने सभी ऋणों का भुगतान करने मे सक्षम है। घोषणा के भेजने के 5 सप्ताह के अन्दर ही अंशधारियों को कम्पनी के स्वैच्छिक समापन का प्रस्ताव पास करना चाहिए।

निस्तारक की नियुक्ति →

कम्पनी के समापन के लिए कम्पनी की सामान्य सभा मे एक विशेष प्रस्ताव पास किया जाता है। इसी सभा मे निस्तारक की नियुक्ति और पारिश्रमिक भी निर्धारित किया जाता है निस्तारक की नियुक्ति के बाद "संचालक मण्डल" के सभी अधिकार समाप्त हो जाते है। यदि निस्तारण का कार्य एक वर्ष से ज्यादा चले तो निस्तारक को प्रत्येक वर्ष के अन्त मे कम्पनी की साधारण सभा बुलानी पड़ती है। और उनपे कार्यों का विवरण उसमे प्रस्तुत करना पड़ता है।

(a) निस्तारक के लिए अन्तिम खाता बनाना अनिवार्य होता है जिसे Liquidator's final Statement A/C जिसमे कम्पनी की सम्पत्तियों का विवरण दिया जाता है।

(b) समापन कार्य पूरा होने के बाद साधारण सभा बुलाई जाती है।

(c) सभा की समाप्ति के एक सप्ताह के अन्दर ही निस्तारक को रजिस्ट्रार के पास समापन खाते की प्रतिलिपि, विवरण सहित भेजनी चाहिए।

रजिस्ट्रार इन खातो व विवरणों की प्राप्ति

के बाद इसकी रजिस्ट्री करता है। रजिस्ट्री के 3 महीने बाद कम्पनी का समापन हो जाता है।

(ii) लेनदारों द्वारा स्वैच्छिक समापन → जब संचालकों द्वारा कम्पनी की Declaration of Solvency कम्पनी रजिस्ट्रार के पास नहीं भेजी जाती तो ऐसी स्थिति में यह मान लिया जाएगा कि कम्पनी अपने दायित्वों का भुगतान करने की स्थिति में नहीं है अर्थात दिवालिया है। इस दशा में कम्पनी का समापन कम्पनी के लेनदारों की इच्छा पर किया जाता है। कम्पनी के समापन के लिए जिस दिन अंशधारियों की सभा बुलाई जाती है उसी दिन या उससे अगले दिन लेनदारों की सभा बुलाना जरूरी है। लेनदारों के पास सूचना इसी प्रकार भेजी जाती है जिस प्रकार कम्पनी के सदस्यों को भेजी जाती है। इस सभा की अध्यक्षता कम्पनी के किसी एक संचालक द्वारा की जानी चाहिए। सभा में संचालकों द्वारा कम्पनी की सम्पत्तियों तथा दायित्वों का पूरा विवरण पेश किया जाता है। इस सभा में जो प्रस्ताव पास होता है उसकी सूचना कम्पनी रजिस्ट्रार को 10 दिन के अन्दर भेजी जानी चाहिए

Liquidator's final Statement A/c

Receipts	Amt	Payment	Amt
To Cash in hand or Cash at Bank	—	1. By Legal charges	—
Amt Recd from To Assets realised as:- L & Building, Plant & machinery, Furniture, Inventory, Trade Receivable	---	2. By Liquidation Remuneration (i) % on Amt on Assets realised (ii) % on Amt Paid to creditors (iii) % on Amt Paid to Shareholders	—
		3. By Liquidation exp	---
To Surplus amount recd from Secured creditors	---	4. By Debentureholders	—
		5. By Preferential cr.	—
		6. By other Unsecured cr.	
To Calls from Shareholders	---	7. By Preference Shareholders (Refund of Cap)	—
		8. By Equity Shareholders (Refund of Cap)	

Remuneration of Liquidators

1. Commission on Amt Realised from Assets

Cash in hand, Cash at Bank को शामिल नहीं करना चाहिए, लेकिन स्पष्ट रूप से Cash भी शामिल है तो Cash को जोड़कर Remuneration प्राप्त किया जाएगा।

Unsecured Creditors ने स्वयं ही Assets को sale किया है तो Liquidators को कोई भी Remuneration नहीं दिया जाएगा।

2. Commission to Liquidators on Amt Payable to Unsecured Creditors

- 1. जब Unsecured cr के भुगतान के लिए पर्याप्त राशि हो

$$\frac{\text{Amt of Unsecured cr} \times \%\ \text{of Comm}}{100}$$

- 2. जब Unsecured cr के भुगतान के लिए पर्याप्त राशि न हो

$$\frac{\text{Amt Available for Unsecured Creditors} \times \%\ \text{of Commission}}{100 + \%\ \text{of Commission}}$$

3. Commission to Liquidator on Amt Payable to Shareholder

$$\frac{\text{Amt Available for Shareholders} \times \%\ \text{of Commission}}{100 + \%\ \text{of Commission}}$$

Debentureholders – ये वे लेनदार जिनका कम्पनी की सम्पत्तियों पर चल प्रभार होता है।

Payment of Interest on Debentures

ऋणपत्रों पर समापन की तिथि तक के ब्याज का भुगतान अवश्य ही किया जाएगा, परन्तु ऋणपत्रों का भुगतान सामान्यतः कम्पनी के समापन की तिथि के कुछ समय बाद ही होता है ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठता है कि बाद के समय के ब्याज का भुगतान किया जाए अथवा नहीं। इसके लिए यह देखना आवश्यक है कि कम्पनी दिवालिया है अथवा नहीं। यदि Unsecured creditors को पूरा भुगतान मिल रहा है तो यह माना जाएगा कि कम्पनी दिवालिया नहीं है इस दशा में ऋणपत्रों पर कम्पनी के समापन की तिथि के बाद के ब्याज का भुगतान भी कर दिया जाएगा। दिवालिया की स्थिति में समापन की date तक ही भुगतान किया जाएगा।

Preferential Creditors

कम्पनी का समापन आरम्भ होने की date

1. के 12 month पहले तक के Central, State, local Govt को due Tax, Rates, Cess

II. 4 month salary, wages or Commission जो कम्पनी के समापन की date आरम्भ होने के 12 month के पूर्व तक की Period में due हुआ हो

Limit : ₹ 20000 Per person से अधिक नहीं

(iii) कम्पनी के समापन के कारण अथवा इससे पूर्व कम्पनी के किसी कर्मचारी की सेवाऐ समाप्त होने के कारण अर्जित अवकाश का पारिश्रमिक

(iv) उपधारा (ii) व (iii) का भुगतान करने के लिए loan देने वाले को Preferential Creditors माना जाता है।

(v) किसी व्यक्ति के दिवालिया होने के कारण कम्पनी के समापन के पूर्व की 12 महीने की अवधि का due Contribution

(vi) Investigation Exp जो कम्पनी द्वारा देय हो

(vii) Gratuity fund, Provident fund, Pension fund

(viii) किसी कर्मचारी को दी ~~जाती~~ जाने वाली Compensatory Amount

List of Contributories

अंशदायियों से अभिप्राय: उन व्यक्तियों से होता है जो कम्पनी के समापन के समय आवश्यक धन कम्पनी को देने के लिए उत्तरदायी होते है। अतः कम्पनी के समापन के समय अंशदायियों की एक सूची तैयार की जाती है। इसमे यह ध्यान रखा जाता है कि धनदाताओं का दायित्व ऋणी की तरह ही होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि उनके द्वारा धन का भुगतान न किए जाने पर न्यायालय को उनकी सम्पत्तियों पर अधिकार प्राप्त हो जाता है।

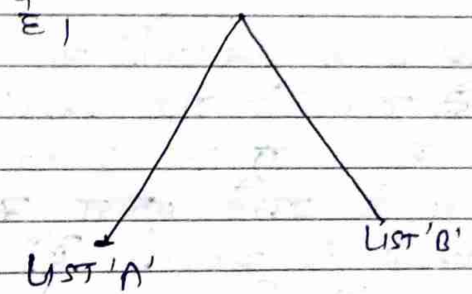

List 'A' मे कम्पनी के वर्तमान अंशधारियों के नाम लिखे जाते है। यदि इन अंशधारियों के पास कोई आंशिक चुकता अंश (Partly Paid Shares) है तो इनका दायित्व इन अंशो पर शेष राशि भुगतान करने का होता है।

List B

List 'B' में उन अंशधारियों के नाम लिखे जाते हैं जिन्होंने कम्पनी का समापन प्रारम्भ होने से पहले एक वर्ष के अन्दर अपने 'Partly Paid Share' अन्य किसी व्यक्ति को transfer कर दिये हैं।

सूची 'B' के अंशदायी अपना अंशदान करने के लिए तभी उत्तरदायी होते हैं जब सूची 'A' के अंशदायियों से प्राप्त धनराशि कम्पनी के सभी दायित्वों का पूर्ण भुगतान करने के लिए पर्याप्त राशि नहीं होती। इसके अतिरिक्त

List B के अंशदायियों का दायित्व केवल अपने द्वारा बेचे गए Partly Paid Shares पर शेष राशि का भुगतान करने का होता है इससे ज्यादा का नहीं। List B के अंशदायी किसी भी loan के लिए उत्तरदायी नहीं होते हैं जो कम्पनी ने उनकी सदस्यता छोड़ने के बाद लिए हो।

List (B) के अंशधारियों ने जिन-जिन तिथियों पर अपने आंशिक चुकता अंश बेचे होते हैं, उन-उन तिथियों पर कम्पनी के creditors की बकाया राशियां ज्ञात की जायेगी और किसी विशेष तिथि के लेनदारों की राशि को उस विशेष तिथि के अंशधारियों में उनके अंशों के अनुपात में विभाजित कर दिया जाता है। ऐसा करने से List 'B' के प्रत्येक अंशदायी का अलग-अलग दायित्व ज्ञात हो जाता है।

उदाहरण